गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों के कुछ असाधारण मुद्दे:आख्यानों तथा वैयक्तिक अध्ययनों के माध्यम से एक विश्लेषण

डॉ. अयूब खान
प्रोफेसर,समाजशास्त्र
शासकीय महाविद्यालय बण्डा, सागर (म.प्र.) एवं
एसोसिएट फेलो,भारतीय उच्च सध्ययन संस्थान, शिमला
ईमेल:ayub3565@gmail.com,9425122781

शोध सारांश:

गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार के सदस्यों द्वारा अनुभव किए जाने वाले मनोवैज्ञानिक और सामाजिक मुद्दे किसी प्रियजन की मृत्यु के बाद उपजे दुख से अलग होते हैं। परिवारों द्वारा झेला गया यह अस्पष्ट नुकसान एक अनूठा अनुभव होता है जहां उनका प्रियजन (गुमशुदा) शारीरिक रूप से अनुपस्थित लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से हर समय उनके साथ मौजूद रहता है। यह अस्पष्ट हानि शोक के साथ अवसाद तथा अंतर व अंतः पारस्परिक संबंधों से जुड़े संघर्षों के लक्षणों को समायोजित करने के लिए एक बचाव (रोक) का काम करती है। प्रस्तुत शोध आलेख में इस व्यक्तिनिष्ठ अनुभव को गहराई से समझने के लिए परिवार के सदस्यों के अनुभवों को समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत आलेख मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के 37 पुलिस थानों में वर्ष 2007 से 2015 तक पंजीबद्ध समस्त गुमशुदा प्रकरणों (जिनमें दस्तयाब तथा अदम दस्तयाब दोनों प्रकार के प्रकरण सम्मिलित हैं) तथा उनके परिवारों में अभावबोध और उनकी आवश्यकताओं पर किए गए अनुभवाश्रित अध्ययन का एक भाग है।अध्ययन हेतु उपयुक्त पाए गए 141 परिवारों में से 34 ऐसे परिवार थे जिनके गुमशुदा परिजनों का साक्षात्कार दिनांक तक कोई पता नहीं था, वे अदम दस्तयाब थे। इन परिवारों के वयस्क सदस्यों से सहमति के बाद अर्ध संरचित साक्षात्कार मार्गदर्शिका की सहायता से गहन साक्षात्कार किए गए।इन उत्तरदाताओं में माता, पिता, पत्नियां, पति तथा वे भाई, बहन थे जो गुमशुदा' के प्रकरण से जुड़े थे और जिन्हें प्रकरण के समस्त पहलुओं की जानकारी थी।

निस्संदेह गुमशुदा व्यक्ति के मामले परिवार के सदस्यों पर आलग-अलग प्रभाव पैदा करते हैं, हालांकि परिवारों पर पड़ने वाले सामाजिक और भावनात्मक प्रभाव आपस में जुड़े रहते हैं। अध्ययन में गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों के जिन असाधारण मुद्दों की पहचान हुई वे हैं-मृत्यु का साक्ष्य, उम्मीद, अपराधबोध,असहायपन, सतत पीड़ा तथा भावनात्मक

खालीपन।उन अनुभवों को उत्तरदाताओं ने इस अलग-अलग तरह से अभिव्यक्त किया जो अनसुलझे और अनिर्णायक शोक के लिए गहन सांस्कृतिक, सामाजिक तथा भावनात्मक महत्व रखते हैं।

बीज शब्द: शोक,गुमशुदा व्यक्ति,मनोसामाजिक अनुभव.

गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों के कुछ असाधारण मुद्दे:
आख्यानों तथा वैयक्तिक अध्ययनों के माध्यम से एक विश्लेषण

भूमिका

जब कोई व्यक्ति कहीं चला जाता है और उसका कोई पता नहीं चलता, तब पीछे छूटे परिवार के सदस्य लापता व्यक्ति की नियति को स्पष्ट करने के सतत मिशन में लगे रहते हैं। वे सभी संभावनाओं पर विचार करते हैं और लगातार आशा और निराशा के बीच झूलते रहते हैं। अर्जेंटीना, ब्राजील, कोलंबिया, चिली, पेरू और मैक्सिको जैसे देशों में इन 'कहीं चल जाने वाले व्यक्तियों' के लिए संदर्भित शब्दावली डिसअपीयर्ड (गायब)है[1] और दुनिया के इन देशों में उसे "किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसका ठिकाना नहीं है और जिसकी सुरक्षा खतरे में है।"[2] [3] [4] [5] [6] भारत देश में इन्हें 'लापता' या 'गुमशुदा' कहा जाता है।

'गुमशुदा' को परिभाषित करना आसान नहीं है। गुमशुदा की परिभाषा स्वाभाविक रूप से उन लोगों से जुड़ी होती है जो उन्हें याद करते हैं। किसी व्यक्ति को याद करना पूरी तरह से संबंधपरक है ; यह इस बात पर निर्भर करता है कि जाने वाले व्यक्ति के पीछे छूटे लोगों से संबंध कैसे है। अधिकतर परिवार पहले अपने स्तर पर लापता की तलाश करते है और जब कोई खबर नहीं मिलती तब उसकी रिपोर्ट पुलिस में करते हैं और फिर वह व्यक्ति 'गुमशुदा' बन जाता है।

ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं है जिनकी रिपोर्ट ही दर्ज नहीं होती, जिनका कोई लेखा-जोखा नहीं होता। जो इस अर्थ से लापता हो जाते हैं कि वे वहां नहीं हैं जहां उन्हें होना चाहिए था, वे स्वयं को गुमशुदा नहीं समझते बल्कि उसे अन्य स्थान पर नया जीवन जीना मानते हैं, और यह हो सकता है कि इनकी सूचना पुलिस को नहीं दी गई हो। हालांकि ऐसे व्यक्ति उन लोगों की दृष्टि में गुमशुदा होते हैं जो उन्हें ढूंढ रहे हैं न कि उनकी अपनी दृष्टि में।[7] यदि ऐसे गुमशुदा व्यक्ति को परिभाषित करने का अधिकार उन परिवारों को दिया जाए जिन्हें वे छोड़कर जाते है, तो वे उसे रास्ते से भटके हुए व्यक्ति के रूप में परिभाषित करते हैं।[8] प्रस्तुत अध्ययन में लापता होने को सम्बन्ध-विच्छेद के रूप में परिभाषित किया गया है, चाहे यह परिभाषा गुमशुदा द्वारा, परिवार के द्वारा या किसी अन्य के द्वारा की गयी हो और गुम होना सुविचारित हो या बिना सोचे समझे।

पुलिस में पंजीकृत ऐसे प्रकरण है जो लम्बे समय से अदृश्य हैं, जिनका कोई सुराग

नहीं है या जिन्होंने जानबूझकर किसी से सम्पर्क स्थापित नहीं किया। जिनके पार्थिव शरीर या अवशेष भी नहीं मिले और जिनके परिवार शोक भी नहीं मना सके। गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार के सदस्यों द्वारा अनुभव की गई इस अनूठी पीड़ा को 'ऐम्बीगुअस लॉस' (अस्पष्ट हानि)[9] शब्द द्वारा वर्णित किया जाता है। यद्यपि किसी प्रियजन की क्षति अपने आप में कठिन घटना है, लेकिन जब इसमें अनिश्चितता जुड़ जाती है तब परिणाम अत्यधिक पीड़ादायक और स्थिर होते हैं। इसलिए अस्पष्ट हानि किसी की मृता से उपजे शोक से होने वाली हानि (क्षति) से अलग है।

यह अध्ययन गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार के सदस्यों के अनुभवों, उन पर पड़ने वाले मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभावों पर केन्द्रित है जो लम्बे अन्तराल से अपने परिजनों की कमी महसूस कर रहे हैं और निरन्तर उसकी तलाश में लगे हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में ऐसे परिवारों के सदस्यों में गुणात्मक तरीके से शोक की प्रकृति को समझने तथा परिवारों के कुछ असाधारण मुद्दों की पहचान की गई है जो अनसुलझे व अनिर्णीत शोक के लिए गहन सांस्कृतिक, सामाजिक व भावनात्मक महत्व रखते हैं। यह अध्ययन इस विशिष्ट शोक से उबरने के लिए साक्ष्य-आधारित हस्तक्षेपों पर शोध हेतु प्रस्ताव भी देता है।

कुछ महत्वपूर्ण समीक्षाकृत साहित्य

समूचे संसार में गुमशुदा व्यक्तियों (जिनमें बच्चे भी सम्मिलित हैं।) पर एक वृहद चर्चा चल रही है।[10] [11] [12] [13] [14] विश्व के विभिन्न देशों में लापता बच्चों तथा किशोरों पर अध्ययन हुए हैं/हो रहे हैं, जिनमें से अधिकांशतः रनअवेज़ और थ्रोनअवेज़, एब्डक्टेड तथा लॉस्ट जैसी पारिवारिक घटनाओं पर केन्द्रित हैं।[15] [16] [17] [18] [19] वास्तव में, भारत में गुमशुदा बच्चों तथा महिलाओं सम्बन्धी धारणा वर्ष 2004 में पहली बार सार्वजनिक चेतना में तब उभरी जब राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की एक्शन रिसर्च ने गुमशुदा बच्चों और महिलाओं तथा मानव तस्करी के बीच संबंध स्थापित किया।[20] निठारी कांड के बाद, मानवाधिकार आयोग द्वारा किए गए अनुभवजन्य अध्ययन की रिपोर्ट कानून की कमियों, कानून प्रवर्तन अभिकरणों के तालमेल के अभाव, संगठित गिरोह की संलिप्तता एवं तस्करी के शिकार बच्चों व महिलाओं की व्यथा को उजागर करती है।[21]

गुमशुदा बच्चों पर चाइल्डलाइन इंडिया फाउंडेशन ने वर्ष 2007 में एक स्वतन्त्र अध्ययन समन्वित किया।[22] तीस शहरों में सातों दिन चौबीसों घण्टे चलने वाली चाइल्डलाइन की निशुल्क दूरभाष सेवा पर प्राप्त फोनकॉल्स पर आधारित यह अध्ययन गुमशुदा बच्चों की

जमीनी हकीकत दिखाता है तथा स्पष्ट करता है कि निठारी कांड के बाद गुमशुदा बच्चों की संख्या में कमी अवश्य आयी है परन्तु समस्या जस की तस बनी हुई है। बचपन बचाओ आन्दोलन[23] द्वारा सूचना के अधिकार आवेदनों के आधार पर संपादित अध्ययन से न केवल गुमशुदा बच्चों की समस्या से निपटने के कारणों और तरीकों को पहचानने में मदद मिली बल्कि यह भी पता चला कि गुमशुदा बच्चों के मामलों में कानून को व्याख्यायित करने और लागू करने के साथ-साथ गुमशुदा प्रकरण की तफ़तीश की जिम्मेदारी पुलिस अधिकारी के ज्ञान तथा गुमशुदा बच्चे के परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है।[24]

गुमशुदा बच्चों ओर महिलाओं पर किए गए अध्ययनों की तुलना में गुमशुदा वयस्कों पर शोध साहित्य की कमी है और कुछ अध्ययन हुए भी हैं वे सैद्धान्तिक रूप से पुलिस आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर गुमशुदा व्यक्ति जनांकिकीय विशेषताएँ जानने, गुम होने के प्रश्न को परिभाषित करने आदि तक सीमित हैं, चाहे वह अमेरिकन्स पर किया गया अध्ययन हो,[25] या आस्ट्रेलिया में गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों तथा मित्रों पर किया गया अध्ययन।[26] ये दोनों अध्ययन 'गुमशुदा' को परिभाषित करने में आने वाली अवधारणात्मक जटिलताओं को उठाते हैं तथा वयस्क गुमशुदा के मुद्दों पर अध्ययनों की कमी को रेखांकित करते हैं।

ब्रिटेन में गुमशुदगी से वापस लौटे व्यक्तियों पर किए गए एक अन्य अध्ययन से लापता होने के लिए उत्तरदायी अभिप्रेरकों तथा घर से लापता रहने पर उनके अनुभवों का अन्वेषण किया गया एवं अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि किन परिस्थितियों में गुमशुदा अपने घर वापस लौटता है और पीछे छूटे परिवार के सदस्यों से कैसे अपने संबंध पुनजीर्वित करता है।[27]

ऐसे परिवारों के अनुभवों पर तो बहुत ही कम या न के बराबर अध्ययन हुए हैं जिनके परिजन लम्बे समय से लापता हैं। हालांकि बॉस [28] [29] [30] [31] [32]द्वारा गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों पर किए गए अध्ययनों से 'ऐम्बीगुअस लॉस'(अस्पष्ट हानि) की एक प्रासंगिक अवधारणा विकसित हुई, जो गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों द्वारा झेले गए नुकसान को अनूठे अनुभव के रूप में संदर्भित करती है, जहाँ उनका प्रियजन शारीरिक रूप से अनुपस्थित है, लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से हर समय उनके साथ मौजूद रहता है। उक्त अवधारणा परिवार के सदस्यों पर पड़ने वाले मनोसामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करने का ढांचा उपलब्ध कराती है।

नेपाल में हुए माओवादी राजद्रोह के दौरान गुमशुदा हुए व्यक्तियों के परिवारों के अध्ययन[33] का निष्कर्ष था कि गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार अपने प्रियजन के लापता होने के

भावनात्मक ट्रॉमा (सदमा) अनुभव कर रहे थे तथा आर्थिक रूप से उबरने के लिए संघर्ष कर रहे थे। उन्हें यह भी पता नहीं था कि उनके परिजन जीवित है या मार दिए गए। उनकी व्यवहारिक कठिनाईयाँ परिवार के प्रत्येक सदस्य के दैनिक जीवन को प्रभावित कर रही थीं।

अध्ययन सम्बन्धी मान्यताएँ

यह अध्ययन इस मान्यता पर आधारित है कि गुमशुदा एपिसोड की समस्या पीड़ित परिवार से बेहतर कोई नहीं जानता। इसमें परिवार की आवश्यकताओं का विश्लेषण प्रचलित अधिकार आधारित परिप्रेक्ष्य के विपरीत है, क्योंकि अधिकार वह अवधारणा है जिसकी माँग की जाती है। इस अध्ययन में गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार अधिकार की भाषा का प्रयोग नहीं करते बल्कि उन अनुभवों, आवश्यकताओं और चुनौतियों की चर्चा करते है जो उनके समक्ष प्रतिदिन उपस्थित होतीं हैं।

इस अध्ययन में 'गुमशुदा' व्यक्ति उसे माना गया है जो बिना किसी बाध्यकारी वैधानिक आदेश के दूसरों की उचित प्रत्याशा तथा/अथवा उनके प्रति उत्तरदायित्वों से मूंह मोड़कर, अपहरण, मानसिक विकार अथवा स्वेच्छा से अपने घर से लापता है तथा जिसकी कोई जानकारी परिवार और पुलिस के पास नहीं है और यदि जानकारी है तो वह अवैधानिक कैद में है। इस अध्ययन में 'गुमशुदा' के लिए मिलते-जुलते शब्द 'लापता' तथा 'अदृश्य' भी प्रयोग किए गए हैं। वस्तुतः अध्ययन में 'गुमशुदा' शब्द का प्रयोग इंटरनेशनल ह्युमनिटेरियन लॉ के अनुरूप सामान्य अर्थ में किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में 'परिवार' तथा 'संबंधियों' को वृहद संदर्भ में उपयोग किया गया है। सांस्कृतिक परिवेश में 'परिवार' में परिवार के सदस्य एवं 'संबंधियों' में निकट मित्र एवं सगे-संबंधी शामिल हैं। अतः अध्ययन में परिवार/परिवारों को मान्यता देते हुए 'परिवार के सदस्य' ऐसे व्यक्ति हैं जिनके गुमशुदा व्यक्ति के साथ व्यक्तिगत संबंध होंगे तथा उनके लापता होने पर उनकी कोई न कोई प्रतिक्रिया अवश्य होगी। यहाँ परिवार के सदस्यों पर ध्यान केन्द्रित करने का उद्देश्य अन्य महत्वपूर्ण रिश्तों (संबंधियों) को छोड़ना नहीं है। दरअसल, परिवार की आधुनिक धारणाऐं अन्य करीबी व्यक्तिगत संबंधों को अध्ययन में सम्मिलित करने की अनुमति देता है। इन करीबी व्यक्तियों में सहकर्मी, परिचित, मित्र, पड़ोसी, दूर के रिश्तेदार यहाँ तक कि सोशल मीडिया पर सम्पर्क वाले लोग हो सकते हैं जो अलग-अलग स्तर पर गुमशुदा एपिसोड से प्रभावित हो सकते हैं एवं उनकी प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं।[34]

हालांकि गुम होने की परिस्थितियाँ हमेशा ज्ञात नहीं होती एवं ऐसी कई परिस्थितियाँ

होती हैं जो एक गुमशुदा प्रकरण का कारण बन सकती हैं[35] [36] और ये परिस्थितियाँ उन लोगों के अनुभवों पर असर डाल सकती हैं जो गुमशुदा को याद करते हैं।[37] यह अध्ययन इस प्रत्यय पर आधारित है कि गुमशुदा एपिसोड की अलग-अलग परिस्थितियों में भी कुछ समानताएँ होती हैं चाहे लापता होना बिना सोचे-समझे हो या सुविचारित; चाहे परिवार के सदस्यों द्वारा-जबरन विवाह, सम्मान-आधारित हिंसा, घरेलू हिंसा, पारिवारिक दुर्व्यवहार तथा अस्वीकृति के जैसी गतिविधियों के फलस्वरूप व्यक्ति को जानबूझकर लापता होना पड़ा हो। प्रस्तुत अध्ययन मध्यप्रदेश के एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में संपादित किया गया है एवं इस अध्ययन में परिवार के उन सदस्यों के अनुभवों को शामिल नहीं किया गया है जो स्वयं हिंसा या दुर्व्यवहार के अपराधी हैं।

प्रस्तुत आलेख में किसी व्यक्ति के लापता होने पर पीछे छूटे परिवार के सदस्यों के अनुभवों, आवश्यकताओं तथा चुनौतियों को रेखांकित करने के लिए दो संबंधित लेकिन अलग-अलग अवधारणाओं की चर्चा की गई है। जिसकी ध्वनि-प्रतिध्वनि आलेख में यथास्थान पर सुनाई देगी।

पद्धतिशास्त्र

प्रस्तुत आलेख मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के 37 पुलिस थानों में वर्ष 2007 से 2015 तक पंजीकृत समस्त गुमशुदा व्यक्तियों (जिनमें दस्तयाब तथा अदम दस्तयाब दोनों प्रकार के प्रकरण सम्मिलित हैं।) तथा उनके परिवारों में अभावबोध तथा उनकी आवश्यकताओं पर किए गए अनुभवाश्रित अध्ययन पर आधारित है। अध्ययन हेतु परिवारों का चयन स्तरीकृत दैव निदर्शन प्रविधि का प्रयोग कर किया गया तथा आधी-अधूरी जानकारी वाले अस्पष्ट लेखन, अत्यधिक हल्की फोटोकॉपी व पुनरावृत्ति वाले प्रकरणों को हटाकर कुल 141 परिवार अध्ययन हेतु उपयुक्त पाए गए।

गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों के उक्त अध्ययन हेतु संकलित तथ्यों का अनुकूलतम उपयोग करने एवं अध्ययन में वांछित विश्वसनीयता व वैधता बनाए रखने के लिए--प्रभावकारी त्रिकोणमितीय संभावना को विस्तार देने के उद्देश्य से--अर्द्ध-संरचनात्मक साक्षात्कार, पूरे परिवार के साथ एक समूह के रूप में बातचीत तथा अर्द्ध-सहभागी अवलोकन विधियों को उपयोग में लाने के साथ गणनात्मक-गुणात्मक संयोजन प्रस्तुत किया गया है।

गुमशुदा व्यक्तियों के संपूर्ण विस्तार (बच्चों को लेकर वृद्धजनों तक) पर केन्द्रित इस अध्ययन के लिए 141 परिवारों में 34 ऐसे परिवार थे जिनके परिजनों का साक्षात्कार के दिनांक

तक कोई पता नहीं था, वे अदम दस्तयाब थे। इन परिवारों के वयस्क सदस्यों से सहमति के बाद कई-कई बार की बैठकों में बातचीत की गई। ये वे व्यक्ति थे जो गुमशुदा एपिसोड से आरंभ से जुड़े थे ओर जिन्हें प्रकरण के समस्त पहलुओं की जानकारी थी। कई-कई बार के साक्षात्कारों में किसी एक परिवार से बात का सिरा जहाँ छूट गया, वहाँ दूसरे परिवार के व्यक्ति ने जोड़ दिया। इस तरह अध्ययन में गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों की बात केवल एक परिवार की बात नहीं रह जाती है। प्रस्तुत आलेख इन्हीं 34 परिवारों के गहन साक्षात्कारों के गुणात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इन परिवारों के जिम्मेदार वयस्कों में 25 पुरुष 9 महिलाएँ थी; जिनमें 5 माँ, 15 पिता, 3 भाई, 5 पुत्र/पुत्रियाँ तथा 3 अन्य करीबी व्यक्ति (संबंधी) थे।

गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों के अनुभव अवधारणात्मक ढांचा

किसी व्यक्ति के गुमशुदा होने से परिवारों के भावनात्मक अनुभव परिजन की मृत्यु से उपजे अनुभव से भिन्न होते हैं। प्रायः लम्बे समय से गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार यह स्वीकार नहीं कर पाते कि उनके परिजन की मृत्यु हो चुकी है, उनमें गुमशुदा की नियति का प्रमाण प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रहती है। चूंकि मृत्यु की पुष्टि नहीं होती और पार्थिव शरीर प्राप्त नहीं होता इसलिए शोक की प्राकृतिक प्रक्रिया आरंभ नहीं की जाती है। परिवारों के इस दुःख की प्रकृति जटिल होती है और वह गुमशुदा को ढूंढने और छोड़ देने के बीच दोलन करते रहते हैं।

दक्षिणपूर्व यूरोप के देश बोस्निया और हर्जेगोविना में किए गए एक अध्ययन में महिलाओं के अनुभवों की तुलना की गई; एक वे महिलाएँ जिनके पतियों की मृत्यु की पुष्टि हो चुकी थी तथा दूसरी जिनके पति लापता थे। इस अध्ययन में पाया गया कि दोनों समूहों में गुमशुदा व्यक्ति की हानि का प्रभाव अलग-अलग था।[38] किसी व्यक्ति के लापता हो जाने पर परिवारों की उम्मीद व अस्पष्ट हानि संबंधी अन्य अध्ययनों[39] [40] के निष्कर्षों को देखते हुए यह स्पष्ट हुआ कि मृत्यु और शोक साहित्य गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों के मुद्दों को संतोषजनक तरीके से संबोधित नहीं कर रहे हैं, तब किसी के लापता होने पर पीछे छूटे परिवार के सदस्यों के अनुभवों को रेखांकित करने, शोक का घटनापरक वर्णन करने और परिवार के सदस्यों की भावनात्मक व सामाजिक आवश्यकताओं को समझने के लिए इस आलेख में सदमा तथा अस्पष्ट हानि- दो संबंधित लेकिन पृथक् अवधारणाओं का उपयोग किया गया है।

सदमा और अस्पष्ट हानि

सदमा (ट्रामा) एक ऐसी अवधारणा है जो गहराई से प्रभावित करने वाले अनुभव का

वर्णन करती है। यह विभिन्न सामाजिक संदर्भों में अलग-अलग प्रकार से परिभाषित होता है एवं इसका प्रभाव उस तरीके पर पड़ता है जिसमें गुमशुदा व्यक्ति अन्य लोगों से सम्बन्धित होता है।[41] होरोविट्ज़[42] के अनुसार, प्रायः सदमा दो तरह से परिलक्षित होता है- एक वो जो विचारों मैं पैठ जाता है और दूसरा जो अनुभव को नकारने के प्रयासों से सम्बन्धित होता है। विचारों में पैठ के लक्षणों में 'अतिसतर्कता, चौंक जाना, फ्लैशबैक, बुरे विचार और गुमशुदा की तलाश' शामिल होते हैं, जबकि नकारने के लक्षणों में 'भूलने की बीमारी, जिम्मेदारी से बचना, स्तब्ध हो जाना और विद्ड्राअल' सम्मिलित होती हैं। इनमें से कई अलग-अलग और कई एक साथ गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार के सदस्यों में देखे जा सकते हैं।[43] [44]

> मुरार में रहने वाले गरीब इलेक्ट्रीशियन डालचंद के 4 बेटों में से सबसे छोटा बेटा 11 साल का अमन 23 जनवरी 2013 को अपने दोस्तों के साथ खेलने के लिए गया, फिर लौटा ही नहीं। डालचंद रोजगार बड़े बेटों को सौंपकर अमन को तलाश करते रहे लेकिन उसका पता नहीं चला।... डालचंद का बेटा कहता है कि पापा अब हर मेलजोल वाले बच्चों की देखरेख की सलाह देते हैं, सोते में बड़बड़ाते हैं और चौंक कर बैठ जाते हैं और जो जिससे मिलने की सलाह देता है वहां चले जाते हैं, चाहे किसी काका से मिलना हो या तांत्रिक से।

घासमंडी में रहने वाले बाबूलाल के बेटे शिव नारायण कहते हैं कि बीमारी ने पिताजी को इतना व्यग्र कर दिया था कि वे 23 अप्रैल 2014 को टहलने की कहकर निकले, उसके बाद उनका पता नहीं चला। वे कहते हैं कि अम्मा गोमती को उम्र के आखिरी पड़ाव पर पिताजी का एकदम छोड़ जाना जीने नहीं दे रहा है। सुबह, दोपहर और शाम को उनकी याद में रोना उनकी दिनचर्या हो गई है। वे चिढ़चिढ़ी हो गई हैं और उन्होंने जीना ही छोड़ दिया है।

अकेले ट्रॉमा को गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार के सदस्यों द्वारा अनुभव किए गए प्रभावों के लिए पूरी तरह उत्तरदायी नहीं माना जा सकता है। गुमशुदा परिघटनाओं से जुड़े शोक को समझने के लिए बॉस[45] [46] [47] द्वारा विकसित 'एमबिगुअस लॉस फ्रेमवर्क' क्षति की प्रकृति या उस शोक प्रक्रिया का वर्णन करता है जिसमें गुमशुदा व्यक्ति या तो शारीरिक या मनोवैज्ञानिक रूप से खो जाता है और जहाँ नुकसान अस्पष्ट या अनसुलझा होता है। बॉस तथा येट्ट्स[48] ने एक शोध आलेख में दो तरह की अस्पष्ट हानि का वर्णन किया है: गुडबाय विदाउट लीविंग (बिना अनुपस्थित अलविदा) जिसमें डिमेंशिया, अवसाद, लत, ऑटिज़्म आदि मनोविकार

आते हैं; तथा लीविंग विदाउट गुडबाय (बिना अलविदा अनुपस्थित) इसमें गुमशुदा व्यक्ति, कैद कर देना, आत्महत्या, गर्भपात, तलाक, बांझपन आदि परिघटनाएँ आती हैं।

> मोहना का मंदबुद्धि नवाब खाँ अपनी माँ जमील का प्यारा बेटा, पिता के गुजर जाने के बाद माँ और अपने भाई अफजल के परिवार के साथ ही रहता था। 29 मई 2013 को नवाब जंगल में लकड़ी काटने की कहकर गया था, उसके बाद लौटा नहीं। भाई अफजल ने उसे जंगल में और रिश्तेदारों के यहाँ तलाश किया, जब नहीं मिला तो मोहना थाने में इसकी सूचना दे दी।... माँ जमील कहती है कि वह कम बुद्धि का है कैसे जिन्दा रह पाएगा इस जमाने में। घर से रसोई के समय हर रोज माँ उसे याद करती है। रो-रोकर उसकी आँखों की रोशनी जाती रही। उसे जब भी हिचकी आती है तो कहती है कि नवाब याद करता होगा।

अतः अस्पष्ट हानि या उस जैसी कोई अन्य क्षति जो गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार के सदस्य अनुभव करते हैं वह अस्पष्ट व विलक्षण है तथा बाह्य रूप से पैदा होती है। यह अन्य दुखद क्षतियों से इसलिए भिन्न है कि यह परिवारों में निरन्तर उपस्थित रहती है। यह ट्रॉमा (सदमा) से भी अलग है ओर बिना समाधान के आजीवन आघात बन सकती है। बॉस का मानना है कि जो लोग परिजन के लापता होने पर भी यथोचित रूप से अच्छा जीवन जीते हैं, वे एक ही समय में दो विपरीत विचारों को अपने दिमाग में रखना सीखकर ऐसा करते हैं। उन्हें विश्वास हो सकता है कि उनका परिजन यद्यपि मर चुका है फिर भी कुछ मायनों में उनके साथ है; या वे शव मिलने की उम्मीद बरकरार रखते हुए अपने जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। बॉस का यह भी मत है कि निराशा और शोक से बाहर आने का एक मात्र रास्ता दो विपरीत विचारों पर टिके रहना है।

गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों के असाधारण मुद्दे

1. नियति की अस्पष्टता

गुमशुदा व्यक्तियों के अधिकांश परिवारों की पहली प्राथमिकता परिजन की विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करना होती है चाहे उसकी पृष्ठभूमि या अवस्थिति कुछ भी हो। ऐसे परिवार अपने परिजन की नियति की पुष्टि चाहते हैं ताकि उन्हें किसी प्रकार का सन्देह न रहे क्योंकि मृत्यु और अंतिम संस्कार को सभी समाज गुमशुदगी से जुड़ी अस्पष्टता से अधिक महत्व देते हैं। जैसा कि बॉस तथा अन्य[49] ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर 9/11 के हमलों में मारे गए लोगों के परिवार के सदस्यों में देखा कि सभी अपने परिजनों के जीवन के साक्ष्य चाहते थे और बाद में

मृत्यु के साक्ष्य। मृत्यु का साक्ष्य और उचित संस्कार करने की इच्छा प्रभावित लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

> पानपत्ते की गोठ, कंपू में रहने वाले 89 साल के रिटायर्ड कृषि विकास अधिकारी शंकरराव के 39 साल के छोटे बेटे संजय ने 8 मार्च 2014 की शाम कपड़े पहने और यह कहकर निकला कि कुछ देर में लौट आएगा लेकिन लौटकर नहीं आया। जब लौटकर नहीं आया। बाद में पता चला कि वह अपनी अंगूठी पर्स में ही छोड़ गया है। संजय के घर छोड़ने की सूचना मिलते ही उसका बड़ा भाई बैंगलुरू से ग्वालियर आया, दो महीने तक संजय की तलाश में लगा रहा, जब कोई सुराग नहीं मिला तो वापस लौट गया।...अब तलाश का संघर्ष अकेले शंकरराव कर रहे हैं। वे कहते हैं जिस हाल में संजय घर छोड़कर गया है उससे लगता है कि वह अब तक जिंदा है और लौटेगा। लेकिन इंतजार के भारी पल माँ विजया और पत्नी लीना काट रही हैं। उन दोनों का दृढ़ विश्वास है कि संजय एक दिन अवश्य लौटेगा। वे दोनों हर वर्ष उसके जन्मदिन पर पूजा, दान-पुण्य करती हैं तथा मोक्ष संबंधी संस्कार को टालती रहती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन से इस प्रचलित तथ्य को बल मिलता है कि गुमशुदा की नियति के बारे में अधिकांशतः परिवार के सदस्यों में मतभिन्नता रहती है। अक्सर परिवार के पुरुष सदस्य अदृश्य व्यक्ति के लम्बे समय तक न लौट आने पर मृत्यु का संदेह करने लगते हैं जबकि महिलाएँ ऐसा नहीं सोचतीं। इसलिए कहा जा सकता है कि लोगों को अपने मृतकों को पुनः प्राप्त करने की आवश्यकता होती है, उन्हें अपने परिजन का पार्थिव शरीर चाहिए क्योंकि उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ने इसे अनुकूलित किया है। यदि उनका परिजन मर चुका है तो वे उसका पार्थिव शरीर देखना चाहते हैं, उसके अंतिम संस्कार में शामिल होना चाहते हैं और यह विश्वास करना चाहते हैं कि उनका परिजन मर चुका है। वे संज्ञानात्मक रूप से उसका सामना करना चाहते हैं तथा शोक मनाना चाहते हैं।

नेपाल में माओवादी राजद्रोह में लापता हुए लोगों के परिवार के सदस्यों के अध्ययन[50] बताते हैं कि लापता पुरुषों की पत्नियों को पार्थिव देह न मिलने तथा अंतिम संस्कार न कर पाने की वजह से उनके समुदायों द्वारा कलंकित होने का अनुभव हुआ-खासकर जब समुदाय के अन्य लोग गुमशुदा पुरुषों को मृत मानते थे लेकिन उनकी पत्नियाँ इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थीं। अतः स्पष्ट है कि अंतिम संस्कार करने की आवश्यकता दुनिया भर में आम है लेकिन इसमें स्थानिक सांस्कृतिक कारकों की भूमिका अन्योन्य है।

2. उम्मीद

उम्मीद एक ऐसी भावना है जिसकी बात प्रत्येक परिवार के सदस्य करते हैं। उम्मीद लापता व्यक्ति के सुरक्षित लौटने की, उम्मीद लापता को तलाशने की सही दिशा मिलने की, उम्मीद परिवार के सदस्यों के जीवन जीने की और परिस्थितियों का सामना करने की तथा भविष्य की होती है।

> शहर की पॉश कॉलोनी चेतकपुरी में रहने वाले चश्मा कारोबारी नितिन का अचानक गायब हो जाना एक संशय है जो अब भी कायम है। 30 वर्षीय महत्वाकांक्षी युवा कारोबारी 9 अक्टूबर 2014 को घर से एक मीटिंग में शामिल होने की कहकर निकला पर वापस घर नहीं लौटा उसी रात नितिन की कार लावारिस हालत में खड़ी मिली....पुलिस कहती है कि नितिन स्वयं घर छोड़कर गया है लेकिन माँ और पत्नी दामिनी ऐसा मानने को तैयार नहीं है। दामिनी ने पति को ढूंढना अपना मिशन बना लिया है। दामिनी कहती है कि बाबाओं और ज्योतिषियों से लेकर सोशल साइट्स तक पर अनवरत प्रयास कर रही हूँ लेकिन उम्मीद की सूचना कहीं से नहीं मिली। माँ अंजू कहती है कि मेरा बेटा जरूर लौटेगा; कभी-कभी बुरे विचार आते हैं लेकिन उम्मीद अब भी बाकी है।

उम्मीद अनुभव के लिए जरूरी होती है और गुमशुदा परिजन के साथ पुनः कनेक्ट करने के लिए सतत तलाश जारी रखने के लिए ईंधन का काम करती है। उम्मीद से गुमशुदा से लगाव को बढ़ाया जा सकता है जो बदले में जटिल शोक प्रक्रिया को कम कर सकती है। यही उम्मीद परिवार के सदस्यों को जीवन जीने का मकसद होती है। और कभी यह उम्मीद दुख का स्त्रोत हो सकती है।

एक लापता बेटी की माँ का कहना था कि.....अब लगता है कि बेटी का प्यार का नाम चिड़िया नहीं रखना चाहिए था। उसे लापता आठ साल हो गए। वो न जाने कहाँ होगी, किस हाल में होगी। वो जिन्दा है भी या नहीं। मैं रोज चिड़ियों को दाना डालती हूँ शायद वो चिड़िया बनकर ही मुझसे मिलने आ जाए।

एक लापता वयस्क के भाई ने साक्षात्कार में टिप्पणी की कि "परिवार के लगभग सभी सदस्य पहले कुछ दिनों तक सदमे की स्थिति में थे....हम उसके (लापता) लिए डरे हुए थे, हमें बहुत घबराहट थी...हम आशान्वित भी थे और ठगा महसूस कर रहे थे।"

अतः प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट था कि गुमशुदा एपिसोड के आरंभिक दिनों में सदमे

और अस्पष्ट हानि के लक्षण भले ही स्पष्ट लगते हों, परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता है, अनुभव अलग-अलग हो सकते हैं/होते जाते हैं। आवश्यक नहीं वे धूंघले हो जाएं, वे घनीभूत भी हो सकते हैं।

अपराधबोध

प्रस्तुत अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि अपराधबोध परिवार के कुछ सदस्यों के लिए अन्य चुनौतीपूर्ण भावना थी। यह परिजन को लापता होने से रोकने का अपराधबोध हो सकता है, तलाश करने के लिए पर्याप्त प्रयास न करने का या तत्परता न दिखाने का हो सकता है, गुमशुदा के प्रति गुस्सा जैसी सामाजिक रूप से अवांछनीय भावना रखने का हो सकता है या व्यक्तिगत आनंद लेने का हो सकता है।

> श्रद्धा (परिवर्तित नाम) के लिए 30 अक्तूबर 2014 धोखे का दिन था, उस दिन उसकी 12 वीं कक्षा में पढ़ने वाली बेटी कोचिंग पढ़ने गई, फिर घर नहीं लौटी। जनरल स्टोर चलाने वाले पिता ने तलाश किया तो पता चला कि पड़ोस में रहने वाला नवयुवक भी गायब है। घर वालों ने थाने में मामला दर्ज करवा दिया, पुलिस ने प्रयास भी किया लेकिन वे दोनों नहीं मिले। श्रद्धा का कहना है कि काश पढ़ाई के लिए मोबाइल फोन नहीं दिलाया होता। पिता अपनी बदनामी से बेटी से गुस्सा है। कभी-कभी माँ श्रद्धा सोचती है कि हमने ही उसे ढूंढने की ज्यादा कोशिश नहीं की। पिता ने तो पुलिस से जानकारी तक लेना बंद कर दिया है। वे न तो अब किसी से मिलते और न ही किसी शादी-सामारोह में शिरकत करते। श्रद्धा ने यह भी बताया कि बेटी के जाने के बाद हमारे वैवाहिक-संबंधों पर भी गहरा असर हुआ है। लगता है जैसे जीवन रूक गया है।

अतः परिवार के एक सदस्य के लापता होने से परिवार के बाकी सदस्यों के बीच सम्बन्धों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अपराधबोध के फलस्वरूप परिवार के सदस्य एक साथ आनंददायक गतिविधियों में भाग नहीं ले पाते। साक्षात्कार के समय कुछ परिवारों के विवाहित युवाओं ने दबी आवाज़ में बताया कि "परिजन के लापता होने पर अंतरंग संबंध स्थापित करने में असमर्थ हैं, वे एक अपराधबोध अनुभव करते हैं। सामाजिक गतिविधियों में भाग न लेने से कई रिश्ते प्रभावित होते हैं, वे अलग-थलग पड़ जाते हैं। कुछ सदस्यों ने यह भी बताया कि परिजन के लापता होने के बाद से उन्होंने सोशल नेटवर्क से दूरी बना ली है क्योंकि वे अपने परिवार के लापता सदस्य के बारे में बात नहीं करना चाहते।"

इस प्रकार जब लापता परिजन शारीरिक रूप से अनुपस्थित रहता है लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से ज्यादातर समय मौजूद रहता है तो परिवारों के सदस्यों की यह धारणा क्षीण हो जाती है कि परिवार व्यवस्था में कौन अंदर है और कौन बाहर है। अस्पष्ट हानि परिवार के सदस्यों की सीमाओं को भ्रमित करती है और परिवार के रिश्तों और रोजमर्रा की जिंदगी की गतिशीलता को बिगाड़ देती है।

विवशता

परिजन के गुमशुदा होने के बाद से परिवार के सदस्य उसे खोजना शुरू करते हैं। पुलिस में गुमशुदगी दर्ज करने के बाद भी वे उसे तलाशते हैं, पोस्टर तथा पर्चे छपवाते हैं। गुमशुदा एपिसोड का प्रभाव परिवार के सदस्यों के नौकरी-धंधों पर पड़ता है, यहाँ तक कि उनकी जमापूंजी चुक जाती है और कर्ज में डूब जाते हैं।

एक गुमशुदा के वृद्ध पिता का कहना था कि-"75 साल की उम्र में अपने बेटे के दो बच्चों को पाल रहा है, उन तमाम परिवारों का क्या होता होगा जिनके कमाने वाले के लापता हो जाने के बाद उनके बच्चों की देखभाल के लिए कोई सहारा नहीं रह जाता। उनके लिए तो दो जून की रोटी की व्यवस्था भी कठिन हो जाती है। हमारे बाद न जाने इन बच्चों का क्या होगा? "

> पनिहार कस्बे से सटे गाँव नहर का पुा के रहने वाले विजयराम अपनी इकलौती बेटी के लिए वर तय करने मुरैना के पास उमरिया का पुरा जाने के लिए घर से निकले तो थे लेकिन न तो उमरिया का पुरा पहुंचे और न ही घर लौटे। परिवार और पुलिस विजयराम को तो छोड़िये जाने की वजह भी नहीं तलाश कर पाए।
>
> बेटों ने इश्तहार भी छपवाए और पता बताने वालों को इनाम देने की बात लिखवाई। कुछ लोगों ने सम्पर्क भी किया लेकिन वे ठग निकले, इससे परेशानी कम होने की बजाय बढ़ गई। विजयराम को तलाशने के लिए कर्ज लेना पड़ा और कर्ज चुकाने के लिए खेत बेचने पड़े। 11 साल बाद भी विजयराम पुलिस के रिकार्ड में 'गुमशुदा' है और परिवार अपने रोजमर्रा के खर्चों के लिए संघर्ष कर रहा है।

एक पत्नी का कहना था कि "पति के अचानक बिना कुछ बताए लापता हाने के बाद घर में वृद्ध और बच्चे रह गए हैं, कोई ऐसा नहीं है जो हमें आश्रय दे। हमारे पास कोई आय का साधन नहीं है, बच्चों की फीस भरना मुश्किल है, मेरी ननद की सगाई छूट गई है। मुझे

यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हम कई करात भूखे सोए हैं तो कभी सादा रोटी खाकर पानी पिया है।"

वस्तुतः कमाने वाले व्यक्ति का लापता हो जाना, तलाशने में आय के स्त्रोतों की समाप्ति न्याय पाने के लिए वकीलों की फीस, परिवार को बदनामी से बचाने के लिए गुमशुदा व्यक्ति का कर्ज लौटाने के लिए किया गया कर्ज परिवार की सुरक्षा को कम करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप जो परिवार संभलकर चल रहे होते हैं, संघर्ष करने लगते हैं और जो संघर्ष कर रहे होते हैं वे विवशता से घिर जाते हैं।

पीड़ा की निरन्तरता

गुमशुदा व्यक्ति के परिवार के सदस्य भावनात्मक प्रभावों को जानते हैं और सामान्यत: यह स्वीकार करते हैं कि परिवार के किसी व्यक्ति का बिना कुछ बताए लापता हो जाना एक गहरा सदमा है। वे हताशा और उदासी के साथ अन्य-अन्य भावनाओं का भी अनुभव करते हैं जो अधिक जटिल हो सकती हैं और शायद जिन्हें सामाजिक रूप से स्वीकार करना आसान नहीं होता। इन भावनाओं का असर मनोदैहिक विकार और स्वास्थ्य व्यवहार पर दिखाई देता है।

> शंकुतल उस मनहूस रात को भूल नहीं पाती है जब 20 अप्रैल 2010 को रात तकरीबन 8 बजे कॉलेज में पढ़ाई करने वाला उसका छोटा बेटा पवन दोस्त के घर पढ़ने की कहकर गया; दूसरे दिन जब सुबह 11 बजे तक घर नहीं लौटा तो पिता बालकिशन और भाई ने खोज शुरु की। पवन कहीं नहीं मिला। पड़ाव थाने की पुलिस ने गुमशुदगी तो दर्ज कर ली लेकिन ढूंढने की जिम्मेदारी परिजनों पर ही डाल दी।.....पवन को गुमशुदा हुए पन्द्रह साल हो गए। उसकी तलाश में भाई का व्यवसाय व पिता का स्वास्थ्य जाता रहा। वे चुप हो गए, उनकी सुनी आँखें कुछ खोजती रहती है। जिस दिन से पवन गायब हुआ है वह ठीक से सोए नहीं है, रात में जागकर रोते हैं। उन्होंने रो रोकर आँखों की रोशनी खो दी है और याद कर करके स्मरणशक्ति। डॉक्टर उन्हें सदमा की बीमारी से पीड़ित बताकर नींद की दवाई दे देते हैं।

अध्ययन के समय कुछ लोग लम्बे समय से शोक व अवसाद में थे। साड़ी के शोरूम में नौकरी करने वाले राजेन्द्र गुप्ता का कहना था कि "पुलिस के रवैये ने मेरे बेटे को मौत के मूंह में धकेल दिया। मैं बार-बार कह रहा था कि मेरा बेटा घर छोड़कर नहीं जा सकता, उसको अगवा किया गया है, मुझसे फिरौती मांगी जा रही है। पुलिस बेटे को लड़की के चक्कर में

जाना बताती रही और फिरौती के फोन कॉल को उसकी नाटकबाजी। तीन महीने बार एक कंकाल पर पड़े कपड़ों से ही बेटे की पहचान कर पाए हैं। बेटे की मौत के बाद तो पत्नी तो जीना ही भूल गई है- न किसी से बातचीत, न खाने-पहनने की फिकर। बहुत पूछने पर कहती है कि अब सबसे विश्वास उठ गया है ईश्वर से भी।

भावनात्मक खालीपन

परिवार के एक सदस्य का लापता हो जाने का साझा दुख किसी परिवार के सदस्यों को करीब ला सकता है तो दूसरों के लिए यह परिवार के सदस्यों को दूर कर सकता है।[51] जिन परिवारों में सदस्यों में परिजन के लापता होने के कारण में मतैक्य नहीं होता, या परिणाम के बारे विरोधी धारणा रखते हैं, ऐसे में एक परिवार के सदस्य आपस में बात करना बंद कर सकते हैं/कर देते हैं। एक खालीपन पैदा करते हैं।

> गिरीशा 10 जनवरी 2014 की उस शाम का जिक्र आते ही रो पड़ती है, जब 11 वी कक्षा में पढ़ने वाला उसका बेटा अनुभव हेयर कट करने अपने चचेरे भाई के साथ निकला था फिर लौटा नहीं। पूछने पर मनोज ने बताया कि कुछ दूर तक ही वह अनुभव के साथ था फिर अलग-अलग हो गए थे।... मनोज से पुलिस की पूछताछ के बाद मनोज के परिजनों ने अनुभव के परिवार से अपने रिश्ते तोड़ लिए हैं। 8 वीं कक्षा तक पढ़ी गृहणी गिरीशा ज्यादा दुनियादारी तो नहीं जानती पर उसे जल्दी ही समझ में आ गया कि दुख में बहुत ज्यादा लोग मदद नहीं करते। परिवार के कुछ सदस्य तो ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे मेरा बेटा नहीं कोई सामान चोरी हो गया हो।

कुछ परिवारों के सदस्यों ने मुख्य रूप से अपनी अपूर्ण भावनाएँ व्यक्त कीं। एक बहन का कथन था कि "मेरा भाई मेरे साथ होता तो चीजें मेरे लिए बहुत अलग होतीं। वो मेरी फ़िकर करता था और मुझे विश्वास था कि वो मुझे परेशानियों में नहीं देख सकता।...अब मैं पहले से ज्यादा ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि मेरा भाई जहाँ भी है, वो उसकी रक्षा करेगा और वापस लौटने के लिए प्रेरित करेगा।" इस प्रकार गुमशुदा एपिसोड गुमशुदा व्यक्ति और परिवार तथा परिवार के पारस्परिक रिश्तों में जो शर्मिंदगी और उल्झन उत्पन्न करता है, वह सामाजिक रूप से रिक्तता तथा व्यक्तिगत रूप से भावनात्मक शून्यता लाती है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि गुमशुदा व्यक्तियों के परिवार के सदस्य लम्बे समय से अपने परिजन के वापस लौटने के प्रतीक्षा में एक अनूठे दुख का अनुभव करते हैं, जो परिजन

की मृत्यु के बाद होने वाले दुख से काफी अलग होता है। नियति की अस्पष्टता, उम्मीद पर कायम रहना, अपराधबोध, विवशता, पीड़ा की निरन्तरता और भावनात्मक खालीपन गुमशुदा व्यक्तियों के परिवारों पर प्रभाव डालते हैं। गुमशुदा एपिसोड परिवारों के लिए आशा और निराशा के बीच एक दोलन है जो इस क्षति को स्वीकार करने से रोकता है। निश्चित रूप से ऐसे परिवार शोक में फंसे हैं और आगे बढ़ने में असमर्थ हैं।

---

[1] बॉस, पालिन (2002), ऐम्बीगुअस लॉगः वर्किंग विथ फैमिलीज़ ऑफ द मिनिंग, *फैमिली प्रोसेस*, 41, 14-17.

[2] पार, एच., एण्ड फाइफ, एन. (2013). मिसिंग ज्योग्राफीज, *प्रोग्रेस इन ह्यूमन ज्योग्राफी*, 37(5), 615-638.

[3] पार, एच., एण्ड स्टीवेंसन, ओ. (2014). सोफीज स्टोरी राइटिंग मिसिंग जर्नीत, *कल्चरल ज्योग्राफीज़*, 21(4), 565-582.

[4] पार एच., एण्ड स्टीवेंसन, ओ. (2015). 'नो न्यूज टूडे' टॉक ऑफ विटनेसिंग विथ फैमिलीत ऑफ मिसिंग पीपुल, *कल्चरल ज्योग्राफीज़*, 22(2), 297-315.

[5] पार, एच., स्टीवेंसन, ओ., फाइफ, एन., एण्ड वूलों, पी. (2015). लिविंग एबसेंसः द स्ट्रेन ज्योग्राफीज़ ऑफ मिसिंग पीपुल, *इन्वारमेंट एण्ड प्लानिंग डी: सोसाइटी एण्ड स्पेस*, 33(2), 191-208.

[6] पार, एच., स्टीवेंसन, ओ. एण्ड वूलना, पी. (2016) सर्चिंग फॉर मिसिंग पीपुलः फैमिलीज़ लिविंग विथ ऐम्बीगुअस एवसेंस, इमोशन, स्पेस एण्ड सोसाइटी, 19, 66-75.

[7] रोजर्स, सी. (1986). *ट्रेसिंग मिसिंग पर्सन्सः एन इन्ट्रोडक्शन टू एजेंसीज़, मैथड्स एण्ड सोर्सेस इन इग्लैण्ड एण्ड वेल्स*, मैनचेस्टरः मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस.

[8] पायनि, एम. (1995). अंडरस्टेंडिंग 'गोइंग मिसिंग': इश्यूज फॉर सोशल वर्क एण्ड सोशल सर्विसेस, *द ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशल वर्क*, 25(30), 333-348.

[9] ऐम्बीगुअस लॉस (अस्पष्ट हानि) तब होता है जब प्रियजन अचानक लापता हो जाते हैं। पीछे छूटे परिवार यह तक नहीं जानते कि उनका परिजन मर चुका है या जीवित है, जो उन परिवारों के भावनात्मक बोध को कम करता है। इसके दो बुनियादी स्वरूप हैं-पहले में, व्यक्ति शारीरिक रूप से अनुपस्थित होते हैं. लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से उपस्थित होते हैं। यहाँ तक कि उन्हें मरा हुआ मान भी लिया गया है, लेकिन उनके अवशेष कभी नहीं मिले। ये गुमशुदा व्यक्ति परिवार के सदस्यों के जेहन में रहते हैं, और वर्षों बरस उनके बारे में सोचते रहते हैं। दूसरे में, व्यक्ति शरीर से तो उपस्थित होते हैं लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से अनुपस्थित होते हैं; वे आसपास के लोगों के लिए भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक रूप से अप्राप्य हैं। इन लोगों को अवसाद, लत या डिमेंशिया हो सकता है। दोनों प्रकार की अस्पष्ट क्षति एक ही परिवार में हो सकती है। (अधिक जानकारी के लिए देखें, बॉस, पॉलिन (2002) ऐम्बिगुअस लॉस इन फैमिलीज़ ऑफ द मिसिंग, *द लांसेट (सप्लीमेंट)*, वॉल्यूम 360, दिसम्बर, 39-40)

[10] बॉस, पॉलिन (2008), एट्रिब्यूट नोट रिकॉर्ड, 37(2), 19-20.

[11] होम्स, एल. (2008), लिविंग इन लिएर एण्ड मिलीज ऑफ मिसिंग पीपुल, लंदनः मिसिंग पीपुल,

[12] होम्स, एल. (2016). रिजॉल्यूशन ऑफ मिसिंग सीन के ग्रीन एण्ड एलिमा (एडि.), मिसिंग पर्सन्सः ए हैंडबुक ऑफ रिसर्व, सरेः एशगेट.

[13] बैस्ट, जे. (1987), रिटॉरिक इन कलेम्स मेकिंग: कंस्ट्रक्टिंग द मिसिंग चिन्न प्रॉब्लम, सोशल प्रॉब्लम्स, 34(2), 101-121.

[14] बैस्ट, जे. (1988). मिसिंग चिल्ड्रन, मिस्लीडिंग स्टेटिस्टिक्स द पक्तिक इन्ट्रेस्ट (92), 84-92.

[15] बैस्ट, जे. (1990) *थ्रेटन्ड चिल्ड्रनः रिटॉरिक एण्ड कंसर्न अबाउट चाइल्ड विक्टिम्स* शिकागोः शिकागो यूनीवर्सिटी प्रेस,

[16] हँसन, एल. (2000). जुविनाइल जस्टिस बुलेटिन, ऑफिस ऑफ द जुविनाइल जस्टिस एण्ड डेलिन्क्वेंसी प्रिवेंशन, वाशिंगटन डी सी, अप्रैल.

[17] मिन, एस.जे., एण्ड फीस्टर, जे. सी. (2010). मिसिंग चिल्ड्रन इन नेशनल न्यूज कवरेज रेसियन एण्ड जेंडर रिप्रेजेंटेशन्स ऑफ मिसिंग चिल्ड्रन केसेस, *कम्युनिकेशन रिसर्च रिपोर्ट्स*, 27, 207-216.

[18] सेन, एस., एण्ड नायर, पी. एम. (2004). *ए रिपोर्ट ऑन ट्रेफिकिंग इन वूमन एण्ड चिल्ड्रन इन इंडिया* 2002-2003 एन एच आर सी-यूनीफेस-आईएसएस प्रोजेक्ट

[19] निठारी कांड, 2006 जिसे नोयडा सीरियल मर्डरस के नाम से भी जाना जाता है। इसमें नोयडा, उत्तरप्रदेश के निठारी गांव के 30 से अधिक बच्चे (जिनमें 17 युवतियों थीं) पोर्नोग्राफी के शिकार बने। ये बच्चे लापता थे, इनके साथ दुर्व्यवहार किया गया, इनका यौन उत्पीड़न हुआ और हत्या कर दी गई (पूर्ण कवरेज के लिए देखें, नोयडा किलिंग्स, जर्नलिजम ऑफ करेज नाम से संबोधित *द इंडियन एक्सप्रेस* की आर्काइव).

[20] चाइल्डलाइन इंडिया फाउंडेशन (2007). *मिसिंग चिल्ड्रन ऑफ इंडिया इस्यूज एण्ड अप्रोचेज ए चाइल्डलाइन पर्सपेक्टिव*, मुबईः सीआइएफ.

[21] बचपन बचाओ आंदोलन (2012). *मिसिंग चिल्ड्रन ऑफ इंडिया*, नई दिल्लीः बीबीए.

[22] 1980 से, बचपन बचाओं आन्दोलन 85, 124 बच्चों को गुलामी, बंधुआ मजदूरी और तस्करी से बचाया है। (देखें, भट्टाचार्य, आर. (2015) वर्किंग चाइल्डहुडसः यूथ, एजेंसी एण्ड द एन्वायरमेंट्स इन इंडिया, जर्नल *प्रोग्रेस इन डेवलपमेंट स्टडीज़*, 15(3), 292.294.

[23] हिर्शेल, जे.डी., एण्ड लैब, एस.पी. (1988), 'हू इज मिसिंग ? द रियलिटीज ऑफ द मिसिंग पर्सन्स प्रॉब्लम', जर्नल ऑफ क्रिमिनल जस्टिस, 16, 35-45.

[24] हेंडर्सन, एम., हेंडर्सन, पी. एण्ड कियरनन, सी. (2000), मिसिंग पर्सन्स इन्सीडेंसस, इश्यूज़ एण्ड इम्पैक्टस, ट्रेंडस एण्ड इश्यूज़ इन क्राइम एण्ड क्रिमिनल जस्टिस, कैनवराः ऑस्ट्रेलियन इंस्टीटयूट ऑफ क्रिमिनोलॉजी, 114, 1-6.

[25] बीहल, एन., मिशैल, एफ, एण्ड वेड, जे. (2003). लॉस्ट फ्रॉम व्यूः ए स्टडी ऑफ मिसिंग पीपुल इन यूनाइटेड किंगडम, ब्रिस्टॉलः पॉलिसी प्रेस,

[26] बॉस, पॉलिन (2006). लॉस, ट्रामा एण्ड रेज़िलिऐंसः थेगब्यूटिक वर्क विय ऐम्बीगुअस लॉस, न्यूयॉर्कः डब्लयू डब्लयू नॉर्टन,'

[27] बॉस, पॉलिन (2008). ए ट्रिब्यूट, नॉट ए मेमोरियल अंडरस्टैंडिंग ऐम्बिगुअस लॉस, सिग्मांड रिकॉर्ड, 37(2), 19-20

[28] बॉस, पालिन (2010). द ट्रामा एण्ड कॉम्पलीकेटेड ग्रीफ ऑफ ऐम्बीगुअस लॉस, पेस्टोरल साइकोलॉजी, 59, 137-145.

[29] इंटरनेशनल कमेटी ऑफ द रेड क्रॉस (2009). फैमिलीज़ ऑफ मिसिंग पर्सन्स इन नेपालः ए स्टडी ऑफ देयर नीड्स, आईसीआर सी काठमांडु, अप्रैल,

[30] किसी गुमशुदा घटना से प्रभावित होना एक विवादास्पद तथ्य है। ऐसे कुछ अध्ययन अवश्य हुए हैं जिनमें यह अनुमान लगाने की कोशिश की गई कि गुमशुदा परिघटना से कितने लोग प्रभावित हुए हैं। ऐसे गैर-परिवारिक सदस्य जो लापता को याद करते हैं, उनकी प्रतिक्रियाओं का हिसाब देने वाले अध्ययनों का नितान्त अभाव है। एक गुमशुदा का कोई परिचित इतना प्रभावित हो सकता है कि वह पोस्टर लगाकर सोशल मीडिया पर अपील साझा करके गुमशुदा की तलाश में शामिल हो जाए। एक अपहृत बच्चे का पड़ोसी इतना चिंतित हो सकता है कि वह अपने बच्चों की देखरेख का तरीका बदल दे। एक सहकर्मी अपने लापता कर्मचारी के पीछे छूटे परिवार की आर्थिक सहायता के लिए धन जुटाने की चुनौती ले सकता है। प्रभावित होने के ये समस्त स्तर एक धन अनुभव, एक भावनात्मक प्रतिक्रिया दर्शाते हैं।

[31] बीहल, एन., मिशैल, एफ. एण्ड वेड, जे. (2003). लॉस्ट फ्रॉम व्यूः ए स्टडी ऑफ मिसिंग पीपुल इन यूनाइटेड किंगडम, ब्रिस्टॉलः पॉलिसी प्रेस.

[32] होम्स, एल. (2016). रिजोल्यूसन ऑफ मिसिंग इंसीडेंट्स इन के. शालेवग्रीन, एण्ड एल. एलिस (एडि.), मिसिंग पर्सन्सः ए हैंडबुक ऑफ रिसर्च, सरेः एशगेट

[33] होम्स, एल. (2008), *लिविंग इन लिंबोः द एक्सपीरियंसेस ऑफ, एण्ड इम्पैक्ट्स, द फैमिलीज़ ऑफ मिसिंग पीपुल*, लंदनः मिसिंग पीपुल.

[34] पॉवेल, एस., बुटोलो, डब्ल्यूए, एण्ड हेगल, एम. (2010). द डिफरेंशियल इंफैक्ट ऑन मेंटल हैल्थ इन वुमन इन बोस्निया एण्ड हर्जेगोविना ऑफ द कन्फर्मड और अनकन्फर्मड लॉस ऑफ देयर हसर्वेड्स. *यूरोपियन साइकोलॉजिस्ट*, 15(3), 185-192.

[35] वेलैड, एस., मैपल, एम., मैके, के, एण्ड ग्लासॉक, जी. (2016). होल्डिंग ऑन टू होपः ए रिव्यू ऑफ द लिटरेचर एक्पलोरिंग मिसिंग पर्सन्स, होप एण्ड ऐम्बीगुअस लॉस. डैथ स्टडीज़, 40(1), 54-60.

[36] ग्रीन, बी. एल. (2000). ट्रॉमेटिक लॉसः कंसेप्चुअल एण्ड एम्पिरिकल लिंक्स बिटवीन ट्रॉमा एण्ड बिरीवमेंट, *जर्नल ऑफ पर्सनल एण्ड इंटरपर्सनल लॉस*, 5, 1-17.

[37] होरोविटज़, एम.जे. (1986). स्ट्रेस रिस्पॉन्स सिंड्रोम्स, नॉरवेल, एनजेः जैसन एरन्सन.

[38] रॉबिन्स, एस. (2010) ऐम्बीगुअस लॉस इन ए नॉन-वेस्टर्न कॉन्टेक्स्टः फैमिलीज़ ऑफ द डिस्अपियर्ड इन पोस्ट कॉफ्लिक्ट नेपाल, फैमिली रिलेशंस, 59, 253-268.

[39] डी कीसर, जे., एण्ड बोलेन, पी. (2015). ए कॉग्निटिव विहेवियरल इंटरवेंशन फॉर इमोशनल डिस्ट्रेस अमंग लब्ड वंस ऑफ मिसिंग पर्सन्सु, रिसोर्स डॉक्यूमेंट, मिसिंग चिल्ड्रन यूरोप.

[40] बॉस, पॉलिन (1999), *ऐम्बीगुअस लॉसः लर्निंग टु लिव विथ अनरिजॉल्वड ग्रीफ*, कैम्ब्रिज, एमएः हार्वर्ड यूनीवर्सिटी

[41] बॉस, पॉलिन (2006). लॉस, ट्रामा एण्ड रेज़िलिऐसः थेराब्यूटिक वर्क विथ ऐम्बीगुअस लॉस, न्यूयॉकः डब्लयू डब्लयू नॉर्टन,

[42] बॉस, पी. एण्ड येङ्ग, जे. आर. (2014), ऐम्बीगुअस लॉसः ए कॉम्पलीकेटेड टाइप ऑफ ग्रीफ व्हेन लब्ड वंस डिसअपियर, ब्रीवमेंट केयर, 33(2), 63-69.

[43] रॉबिन्स, एस. (2010) ऐम्बीगुअस लॉस इन ए नॉन-वेस्टर्न कॉन्टेक्स्टः फैमिलीज़ ऑफ द डिस्अपियर्ड इन पोस्ट कॉफ्लिक्ट नेपाल, फैमिली रिलेशंस, 59, 253-268.

[44] बॉस, पी., व्यूली, एल., वीलिंग, ई. टर्नर, डब्ल्यू एण्ड लॉक्रूज़, एस. (2003) हीलिंग लॉस,

एंविगुइटी, एण्ड ट्रॉमाः ए कम्यूनिटी-बेस्ड इंटरवेंशन विथ फैमिलीज ऑफ यूनियन वर्करस मिसिंग आफ्टर द 9/11 अटैक्स इन न्यूयॉर्क सिटी. *जर्नल ऑफ मैराइटल एण्ड फैमिली थैरेपी.*, 29(4), 455-467.

45 रॉबिन्स, एस. (2010) ऐम्बीगुअस लॉस इन ए नॉन-वेस्टर्न कॉन्टेक्स्टः फैमिलीज़ ऑफ द डिस्अपियर्ड इन पोस्ट कॉफ्लिक्ट नेपाल, फैमिली रिलेशंस, 59, 253-268.

46 होम्स, एल. (2008). लिविंग इन लिंबोः द एक्सपीरियंसेस ऑफ, एण्ड इम्पैक्ट्स, द फैमिलीज़ ऑफ मिसिंग पीपुल, लंदनः मिसिंग पीपुल.

47

48

49

50

51